

चुनाव हेतु पुलिस संचार प्रशिक्षण निर्देशिका



उत्तर प्रदेश पुलिस दूरसंचार मुख्यालय, महानगर, लखनऊ

चुनाव हेतु पुलिस संचार प्रशिक्षण निर्देशिका (वायरलेस सेटों का संचालन व रखरखाव)



उ०प्र० पुलिस दूरसंचार मुख्यालय
महानगर, लखनऊ

लेखन एवं डिज़ाइन

सत्य प्रकाश सिंह,

उपमहानिरीक्षक (पुलिस दूरसंचार), एम०सी०आर० / प्रशिक्षण

सहयोग

अजय कुमार सोनकर

प्र०परि०यॉ० / 1049

पाठ्यक्रम

सैद्धांतिक विषय

क्र०	कालांश	समयावधि	विषय
1	प्रथम	10.00 – 10.30	वी.एच.एफ. तकनीक की महत्ता, वी.एच.एफ. सेट की खूबियाँ वी.एच.एफ. सेट की सीमाएँ, सेल फोन व वायरलेस संचार का तुलनात्मक विवरण
2	द्वितीय	10.00 – 11.00	संचार भंग होने के कारण व उनका निराकरण, सेट के कार्य न करने पर
3	तृतीय	11.00 – 11.40	रेडियो टेलीफोनी केन्द्र के उपकरण एवं उनका रखरखाव
4	चतुर्थ	11.40 – 12.10	रेडियो टेलीफोनी केन्द्र हेतु "मॉडल कोड ऑफ कण्डक्ट"
5	पंचम	12.20 – 12.50	रेडियो टेलीफोनी प्रोसीजर
6	षष्ठम	12.50 – 13.20	रेडियो टेलीफोनी वार्ता के लिए ध्यान देने वाली बातें

प्रायोगिक पाठ्यक्रम

क्र०	कालांश	समयावधि	विषय
1	सप्तम	14.30 – 15.15	हैन्डस ऑन आरटी सेट्स (OPERATION, INSTALLATION, CHARGING & MAINTENANCE OF BATTERY)
2	अष्टम	15.25 – 16.10	आरटी सेट्स के विभिन्न फीचर्स (ANI, SQUELCH, POWER, CHECK RADIO, CALL ALERT, SCAN etc.)
3	नवम	16.20 – 17.00	वार्तालाप अभ्यास (WORKING ON RT SET)

1.

वी.एच.एफ. तकनीक की महत्ता

वी.एच.एफ. ट्रांसमिटर सेट आधुनिक तकनीकी पर आधारित **Synthesized, land/mobile** संचार उपकरण हैं। इन सेटों में अधिकतम लगभग 100 चैनल प्रोग्राम किये जा सकते हैं। स्टैटिक/मोबाइल सेट का अधिकतम पावर आउटपुट 25 वॉट है, जिसे कम भी किया जा सकता है। हैण्ड हैल्ड सेट का अधिकतम पावर आउटपुट 05 वॉट होता है, इसे भी कम किया जा सकता है। स्टैटिक/मोबाइल सेट 12 वोल्ट DC से चलाया जाता है। इस सेट से स्टैटिक मोड में कंट्रोल रूम से सामान्यतः 50–60 किलोमीटर की हवाई दूरी तक संचार होता है, जबकि मोबाइल से मोबाइल के बीच अधिकतम 20 किलोमीटर तक संचार हो सकता है। पुलिस स्टेशनों से उनके क्षेत्र के मोबाइल व पिकेट पार्टियों से सम्पर्क किया जा सकता है।

वी.एच.एफ. सेट की खूबियाँ:

- सेट की आउट पावर कम/अधिक की जा सकती है।
- एण्टिना की ऊँचाई अधिक करके दूर तक संचार किया जा सकता है।
- यह उपकरण उपयोग में आसान है।
- नयी ग्रिड तुरन्त तैयार की जा सकती है।
- आपदा की स्थिति में तुरन्त संचार कायम किया जा सकता है।
- सभी केन्द्रों को एक साथ सन्देश (2 से अधिक केन्द्रों को) तुरन्त एवं एक साथ भेजा जा सकता है। यह व्यवस्था अन्य किसी संचार पद्धति में उपलब्ध नहीं होती है।

विशेष खूबियाँ:

- सलेक्टिव कॉलिंग (किसी विशेष या ग्रुप में बात करना)
- कॉल अलर्ट (स्टेशन को रिंग टोन के द्वारा सचेत करना)
- रेडियो चेक (दूरस्थ के रेडियो को चेक करना)
- स्कैन (एक से अधिक चैनल को एक साथ आब्जर्व करना)
- शॉर्ट संदेश प्रेषण (14 करेक्टर डेटा को भेजना)
- स्टेटस (सेट का अपडेट स्टेटस भेजने हेतु)
- यूटिलिटी (पावर लो/हाई, अलार्म, भाषा चयन)
- रिपीटर टॉक अराउन्ड (रिपीटर के कार्य न करने की दशा)।
- टाइम आउट टाइमर (निश्चित समय के उपरान्त स्वतः ट्रांसमीटर का बन्द हो जाना)
- ए.एन.आई. नम्बर (कॉलिंग स्टेशन की पहचान करने के लिए)

वी.एच.एफ. सेट की सीमाएँ:

- यह **Line of sight** संचार है। अतः दो एण्टीना के बीच में अवरोध आने से संचार बाधित होता है।
- वायुमण्डल के आयनीकरण से संचार पर प्रभाव नहीं पड़ता है।
- गर्मियों के मौसम में संचार सामान्य से कम दूरी तक होता है क्योंकि पृथ्वी के समीप वायु का अपवर्तनांक कम हो जाता है और विद्युत चुम्बकीय तरंगें वायुमण्डल को भेदकर अनन्त में चली जाती हैं।
- सर्दियों के मौसम में संचार सामान्य से अधिक दूरी तक होता है जिसे **Duct Communication** कहते हैं। पृथ्वी के समीप वायु का अपवर्तनांक सर्दियों में अधिक हो जाता है और विद्युत चुम्बकीय तरंगें वायुमण्डल से मुड़कर पृथ्वी की तरफ आती हैं और टकराकर पुनः वायुमण्डल की तरफ लौटती हैं। इस क्रिया के बार-बार होने के कारण विद्युत चुम्बकीय तरंगें दूर तक चली जाती हैं।
- बरसात का प्रभाव 10 GHz से कम आवृत्ति की विद्युत चुम्बकीय तरंगों के अवशोषण पर नहीं होता है।

सेल फोन व वायरलेस संचार का तुलनात्मक अध्ययन:

(क) मोबाइल से लाभ:

तथ्य	सेल फोन	वायरलेस
रेन्ज	कोई सीमा नहीं	अधिकतम 50–60 किमी (कन्ट्रोल रूम से थाने तक)
गोपनीयता	बहुत अधिक	शून्य
इनपुट	आडियो, वीडियो, डेटा	केवल डेटा
उपलब्धता	सभी को	कुछ ही लोगों को
जैमिंग	नहीं	हाँ
संदेश प्रसारण अवधि	असीमित	अधिकतम 1 मिनट तक
संचार प्रणाली	सुनना और बात करना साथ-साथ	सुनना और बात करना अलग-अलग समय पर
वजन	कम	अधिक
ऊर्जा खपत	कम (2वॉट से कम)	अधिक (25 वॉट तक)
बैटरी की कीमत	कम	लगभग समान
प्रणाली का स्थापना मूल्य	बहुत अधिक	कम
प्रणाली का प्रयोग मूल्य	कम	कम

(ख) वायरलेस से लाभ:

तथ्य	सेल फोन	वायरलेस
नेटवर्क रजिस्ट्रेशन	समय लगता है	तुरन्त
निर्भरता	दूसरे माध्यम पर	किसी पर नहीं
संचार	टावर से सम्पर्क पर निर्भर है	रेन्ज में सम्पर्क निश्चित है
सेट में चैनल	एक	128 तक
काल संख्या	एक सीमा तक एक बार में	असीमित
टाईम डिले	बहुत अधिक	शून्य
संचालन व्यय	सदैव, प्रयोग पर निर्भर	नहीं के बराबर
सुरक्षा	करनी पड़ती है	सुरक्षित
सेट का जीवन	कम	अधिक
सम्पर्क में समय	चैनल की उपलब्धता पर	तुरन्त
खराबी की मरम्मत	अन्य एजेंसियों पर निर्भरता के कारण मरम्मत में समय लगता है।	तुरन्त



2.

संचार भंग होने के कारण व उनका निराकरण

- बैटरी वोल्टेज को चेक करें।
- वी0एच0एफ0 संचार **Line of Sight** है। अतः एण्टीना की ऊँचाई पर्याप्त होनी चाहिए।
- एण्टीना के आस-पास ऊँचे-ऊँचे पेड़ व मकान नहीं होने चाहिए।
- हाई-टेंशन विद्युत लाईन एण्टीना के आस-पास नहीं होनी चाहिए।
- यदि सेट पॉवर सप्लाई से जुड़ा है तो मेन्स का इनपुट चेक करें।
- दूरस्थ स्टेशन को ग्रिड चैनल पर होना चाहिए।
- फीडर की लम्बाई आवश्यकता से अधिक नहीं होनी चाहिए।
- अतिरिक्त फीडर को क्वायल बनाकर नहीं रखना चाहिए।
- एण्टीना का रेडिएटर टूटा नहीं होना चाहिए।
- मोबाइल/वाहन में लगे एण्टीना को न तो कुचालक से कवर करना चाहिए, और न ही मोबाइल/वाहन के फ्रेम से बाँधना चाहिए।
- एण्टीना सदैव सीधा रखना चाहिए।

सेट के कार्य न करने पर निम्न को चेक करें-

- बैटरी लीड बैटरी टर्मिनल से ठीक तरह से जोड़ी गयी है।
- बैटरी लीड का पयूज चेक करें।
- बैटरी का वोल्टेज चेक करें (बैटरी डिस्चार्ज नहीं होनी चाहिए)।
- यदि सेट पॉवर सप्लाई से जुड़ा है तो मेन्स का इनपुट चेक करें।
- एण्टीना का फीडर सेट से जुड़ा होना चाहिए।
- सही चैनल का चुनाव किया गया है अथवा नहीं।
- माइक्रोफोन माईक सॉकेट से ठीक तरह से जुड़ा होना चाहिए।
- एण्टीना का रेडिएटर टूटा नहीं होना चाहिए।
- एण्टीना केबल से जुड़ा है अथवा नहीं।

3.

रेडियो टेलीफोनी केन्द्र के उपकरण एवं उनका रखरखाव

रेडियो टेलीफोनी केन्द्र पर सामान्यतः निम्न उपकरण एवं उनकी उपकर्मिकाएँ उपलब्ध रहती हैं—

क्र०	सेट / उपकरण	विवरण
1.	रेडियो टेलीफोनी सेट	यह सेट सामान्यतः 25 वॉट क्षमता का वीएचएफ आवृत्ति का सेट होता है जो 12 वोल्ट डीसी सप्लाई पर कार्य करता है।
2.	पावर सप्लाई	25 वॉट क्षमता के सेट के साथ प्रयोग की जाने वाली यह पॉवर सप्लाई एसी टू डीसी कन्वर्टर होता है जो 230 वोल्ट एसी को 12 वोल्ट डीसी में बदल देता है।
3.	हैवी ड्यूटी बैटरी	यह 12 वोल्ट 100 एएच वीआरएलए एसएमएफ या 12 वोल्ट 120 एएच लेड एसिड बैटरी हो सकती है। एसएमएफ बैटरी में अलग से डिस्टिल वाटर डालने की आवश्यकता नहीं होती है परन्तु लेड एसिड बैटरी में समय-समय पर अलग से डिस्टिल वाटर डालने की आवश्यकता होती है।
4.	कनेक्टर, फीडर एवं एन्टीना	रेडियो टेलीफोनी सेट से सिग्नल सही प्रकार से प्रसारित होने चाहिये, इसमें कनेक्टर, फीडर एवं एन्टीना का अत्यन्त महत्वपूर्ण योगदान होता है। कनेक्टर का कार्य फीडर के एक सिरे को सेट से एवं फीडर के दूसरे सिरे को एन्टीना से जोड़ने का होता है। फीडर एवं कनेक्टर का जोड़ सही न होने पर सेट से एन्टीना को सही पॉवर प्राप्त नहीं होती है और अच्छे से अच्छा वायरलेस सेट लगाने के बाद भी सिग्नल बहुत दूर तक नहीं जा पाते हैं।



स्टैटिक रेडियो टेलीफोनी सेट



हैण्ड हैल्ड रेडियो टेलीफोनी सेट



पॉवर सप्लाई



एसएमएफ बैटरी

वायरलेस स्टैटिक सेट / हैन्ड हेल्ड सेट एवं उपकरणों का रख-रखाव:

क्र0	सेट / उपकरण	रख-रखाव
1.	रेडियो टेलीफोनी सेट	<ol style="list-style-type: none"> सेट को गर्मी, धूल, धूप, नमी, पानी व थिनर से बचाना चाहिये। सेट को आवश्यकता पड़ने पर गीले निचोड़े गये कपड़े से पोंछना चाहिये। सेट को पेट्रोलियम पदार्थ या थिनर इत्यादि से साफ नहीं करना चाहिये। सेट पर अनावश्यक वार्तालाप नहीं करना चाहिये। सेट के पास अनावश्यक रूप से रजिस्टर इत्यादि सामग्री नहीं रखनी चाहिये। सेट का पीटीटी स्विच छोड़ते ही तुरन्त रिलीज होना चाहिये अन्यथा इसकी साफ सफाई कराकर दुरुस्त करा लेना चाहिये। सेट का पीटीटी स्विच दबा न रहे इसका सदैव ध्यान रखना चाहिए अन्यथा ग्रिड जैमिंग की समस्या होगी।
2.	पॉवर सप्लाइ	<ol style="list-style-type: none"> पॉवर सप्लाइ को गर्मी, धूल, धूप व पानी से बचाना चाहिये। पॉवर सप्लाइ को भौतिक रूप से प्रतिदिन चेक करते रहना चाहिए। पॉवर सप्लाइ का विद्युत सॉकेट से कनेक्शन ढीला नहीं होने देना चाहिए। पॉवर सप्लाइ के ऊपर कोई भी सामग्री कदापि नहीं रखनी चाहिये।
3.	हैवी ड्यूटी बैटरी	<ol style="list-style-type: none"> बैटरी को गर्मी, धूल, धूप व पानी से बचाना चाहिये। बैटरी को भौतिक रूप से प्रतिदिन चेक करते रहना चाहिए। बैटरी के टर्मिनल साफ रहने चाहिये एवं बैटरी लीड से कनेक्शन ढीला नहीं होने देना चाहिए। बैटरी के ऊपर धातु की कोई भी सामग्री कदापि नहीं रखनी चाहिये। बैटरियों की चार्जिंग समय-समय पर करते रहना चाहिए।
4.	कनेक्टर, फीडर एवं एन्टीना	<ol style="list-style-type: none"> कनेक्टर सेट तथा एण्टीना से कसा होना चाहिये। कनेक्टर से फीडर सही प्रकार से जोड़ा / सोल्डर होना चाहिये। फीडर कटा नहीं होना चाहिये। फीडर अत्यधिक लम्बा नहीं होना चाहिये। फीडर के पास अधिक वोल्टेज के तार नहीं होने चाहिये। एण्टीना मास्ट पर यथासम्भव एक से अधिक एण्टीना लगा हो तो आपात स्थिति में काम आता है। एण्टीना मास्ट पर यथासम्भव तड़ित चालक व लाईट लगी होनी चाहिये। एण्टीना मास्ट पर यथासम्भव चक्रानुक्रम में लाल-सिल्वर-लाल पेन्ट करना चाहिये।

4.

रेडियो टेलीफोनी केन्द्र हेतु "मॉडल कोड ऑफ कण्डक्ट"

रेडियो टेलीफोनी केन्द्र पर संवेदनशील एवं महत्वपूर्ण संदेशों का आदान-प्रदान निरन्तर होता रहता है जो विशिष्ट महानुभावों/अधिकारियों की सुरक्षा, महत्वपूर्ण कार्यक्रम, सुरक्षा बलों के संचरण से सम्बन्धित होने के कारण सुरक्षा की दृष्टि से संवेदनशील हो सकती हैं। संदेशों की गोपनीयता भंग हो जाने से अराजक तत्वों को लाभ हो सकता है तथा इनकी गलत व्याख्या हो जाने से अर्थ का अनर्थ हो जाता है।

रेडियो टेलीफोनी केन्द्र निषिद्ध स्थलों की श्रेणी में आच्छादित होता है। ऐसे स्थल पर कार्य करने वाले कर्मचारियों के लिये "मॉडल कोड ऑफ कण्डक्ट" का होना आवश्यक है जिसके अन्तर्गत निम्न बिन्दु समाहित होने चाहिये—

- ड्यूटी ऑपरेटर अपनी ड्यूटी पर समय से 05 मिनट पूर्व आयें।
- पूर्व परिचालक से महत्वपूर्ण बातें/घटनाओं की जानकारी अनिवार्यतः की जाय।
- लॉग-बुक का अध्ययन कर सभी महत्वपूर्ण सूचनाओं पर स्थिति स्पष्ट कर लेनी चाहिये।
- समस्त महत्वपूर्ण आदेश/निर्देश एवं उनके समयबद्ध अनुपालन की जानकारी अवश्य करनी चाहिये।
- ड्यूटी पर वर्दी में रहना चाहिये।
- ड्यूटी ऑफ करने वाले कार्मिक को अपनी ड्यूटी से सम्बन्धित समस्त घटनाओं/निर्देशों के सम्बन्ध ड्यूटी प्रारम्भ करने वाले कार्मिक को बताना चाहिये।
- ड्यूटी प्रारम्भ करने वाले कार्मिक को सभी उपकरणों एवं अभिलेखों को भली भाँति चेक कर आश्वस्त हो लेना चाहिये।
- केन्द्र पर साफ-सफाई प्रतिदिन की जानी चाहिये तथा इस दौरान उपकरणों का पर्याप्त बचाव करना चाहिये।
- केन्द्र अथवा ड्यूटी के दौरान किसी भी घटना की सूचना तत्काल सम्बन्धित को प्रदान करना चाहिये।
- भाषा मृदु तथा व्यवहार सामान्य रखें।
- केन्द्र पर प्राप्त होने वाले संदेशों को सम्बन्धित को तत्काल वितरित कराना चाहिये।
- डिलीवरी बुक में संदेशों की सही समय पर प्राप्ति एवं प्राप्तकर्ता के हस्ताक्षर चेक करते रहना चाहिये।
- सेट, बैटरी चार्जर एवं बैटरी की सफाई प्रतिदिन करना चाहिये।
- सेट अधिक गर्म न हो रहा हो यह ध्यान रखना चाहिये।
- बैटरी सही दशा में चार्ज रखनी चाहिये।
- उपकरणों की खराबी तत्काल ठीक करानी चाहिये।
- निर्धारित समय पर सामूहिक पुकार अवश्य की जानी चाहिये।
- अपनी ड्यूटी के दौरान समस्त छोटी से छोटी एवं महत्वपूर्ण घटनाओं को लागबुक में लिखें।

- ड्यूटी के दौरान प्राप्त संदेशों के प्रसारण में विलम्ब न किया जाय।
- वीआईपी या अन्य कोई महत्वपूर्ण प्रक्रिया को छोड़कर संदेश लम्बित न रखा जाय।
- संकेत सुरक्षा नियमों का पालन अनिवार्य रूप से करना चाहिये। काम कम होने पर संकेत सुरक्षा नियमों को पढ़ते रहना चाहिये।
- सन्देशों की गोपनीयता से किसी भी प्रकार का समझौता नहीं करना चाहिये।
- ड्यूटी के दौरान प्राप्त महत्वपूर्ण संदेश अथवा आदेश/निर्देश पर किसी अन्य से चर्चा नहीं करनी चाहिये।
- गोपनीय सन्देशों या सन्देशों के महत्वपूर्ण भाग को संकेत सुरक्षा नियमों का पालन करते हुए ही प्रसारित करना चाहिये।
- सेट का वाल्यूम कम रखना चाहिये ताकि अन्य लोग वार्ता न सुन सकें।
- टेलीफोन पर सन्देशों का आदान-प्रदान न करें। मात्र किसी शब्द/वाक्य के सम्बन्ध में स्थिति स्पष्ट की जा सकती है।
- यदि चैनल पर अन्य कोई अवांछनीय कोड या वार्तालाप सुनने में आये तो अलर्ट होकर तुरन्त प्रकरण उच्चाधिकारियों के संज्ञान में लाना चाहिये।
- ड्यूटी कार्मिक को सदैव ड्यूटी पर शारीरिक एवं मानसिक तौर पर सतर्क एवं सचेत रहना चाहिये।
- रेडियो टेलीफोनी ड्यूटी पर अतिथि सत्कार, चाय, खाना, मादक पदार्थों का सेवन, धूम्रपान इत्यादि गतिविधियाँ वर्जित हैं।



5.

रेडियो टेलीफोनी प्रोसीजर

समाज में प्रत्येक व्यक्ति के वार्ता करने का ढंग भिन्न-भिन्न होता है। कुछ लोग बहुत तेज, कुछ बहुत धीमे और कुछ लोग इस प्रकार वार्ता करते हैं कि उन्हें अपनी बात दोहराने की जरूरत पड़ती है। रेडियो टेलीफोनी में कार्य को त्वरित गति से करना पड़ता है। अतः वार्ता करने के नियम बनाये गये हैं जिनके प्रयोग से न सिर्फ समय की बचत होती है बल्कि संदेश साफ और बिना किसी रूकावट के भेजा और प्राप्त किया जा सकता है। इस हेतु जिन नियमों का पालन किया जाता है, उन्हें हम चार वर्गों में वर्गीकृत कर सकते हैं। इन्हें अंग्रेजी वर्णमाला में R.S.V.P. भी कहते हैं।

- लय (RHYTHM)
- गति (SPEED)
- ध्वनि की तीव्रता (VOLUME)
- स्वर (PITCH)

लय (RHYTHM)

वार्ता के दौरान लयबद्धता को बनाये रखना आवश्यक है। इसके लिये निम्न नियमों का पालन करना चाहिये—

1. सन्देश को छोटे-छोटे मगर पूर्ण वाक्यों में बोला जाय।
2. सन्देश के टुकड़े न किये जायें।
3. वार्ता के मध्य में अनावश्यक शब्दों का प्रयोग न किया जाय।
4. स्वयं से सन्देश में उलट-फेर न किया जाय।

गति (SPEED)

वार्ता के दौरान अपनी बात स्पष्ट रूप से प्राप्तकर्ता तक पहुँच जाय, इस हेतु निम्न सावधानियाँ प्रयोग में लायी जा सकती हैं—

1. बोलने की गति आरम्भ से अन्त तक एक समान रहनी चाहिये।
2. जल्दबाजी न की जाय।
3. वार्ता के मध्य आंशिक विराम दिया जाय।
4. महत्वपूर्ण शब्दों का उच्चारण अनुरोध पर बिना किसी झुंझलाहट के दोबारा किया जाय।

ध्वनि की तीव्रता (VOLUME)

रेडियो टेलीफोनी पर वार्ता करते समय हमें अपनी आवाज की तीव्रता इतनी ही रखनी चाहिये कि दूसरे छोर पर सुन रहा व्यक्ति हमारी बात को आसानी से सुन और समझ ले। इस हेतु निम्न सावधानियाँ बरतनी चाहिये—

1. वार्ता की ध्वनि एवं लय एक समान रखनी चाहिये।
2. बहुत ज्यादा चिल्लाकर अथवा बहुत धीमे से नहीं बोलना चाहिये।
3. बोलते समय मुँह माइक्रोफोन के पास होना चाहिये।

स्वर (PITCH)

रेडियो टेलीफोनी में निम्न स्वर की अपेक्षा उच्च स्वर में प्रेषण अधिक सुगमता से होता है। अतः वार्तालाप अथवा संदेश प्रेषण के समय उच्च स्वर को वरीयता देनी चाहिये तथा यह ध्यान देना चाहिये कि वाक्यांश के अन्त तक उच्च स्वर बना रहे।

वार्ता के दौरान सन्देश आसानी से निम्न कोड का प्रयोग करके भेजा और प्राप्त किया जा सकता है—

International Phonetic Alphabet

A	..	Alpha	N	..	November
B	Bravo	O	----	Oscar
C	Charlie	P	Papa
D	...	Delta	Q	Quebec
E	.	Echo	R	...	Romeo
F	Foxtrot	S	...	Sierra
G	Golf	T	-	Tango
H	Hotel	U	..	Uniform
I	..	India	V	Victor
J	Juliet	W	...	Whiskey
K	Kilo	X	X-ray
L	Lima	Y	Yankee
M	..	Mike	Z	Zulu

6.

रेडियो टेलीफोनी वार्ता के लिए ध्यान देने वाली बातें

रेडियो टेलीफोनी संचार द्वारा वरिष्ठ अधिकारियों के आदेश/निर्देश प्रसारित किये जाते हैं। साथ ही कानून-व्यवस्था से सम्बन्धित सूचनाओं का प्रेषण किया जाता है। संक्षिप्त में यह कहा जा सकता है कि रेडियो टेलीफोनी पर प्रसारण बहुत सोच समझकर करना चाहिये। यह संचार टेलीफोन एवं सेलुलर मोबाइल संचार से भिन्न संचार है। इस व्यवस्था में समय, सन्देश एवं सूचना की अत्यन्त महत्ता है। अर्थात् सन्देश संक्षिप्त एवं सारगर्भित होना परम आवश्यक है। रेडियो टेलीफोनी संचार पर आदेशों के प्रसारण के साथ-साथ आदेशों के अनुपालन की सूचना तथा प्रगति भी प्रसारित की जाती है।

अतएव रेडियो टेलीफोनी संचार पर वार्ता के दौरान निम्न बातों का पालन करना अनिवार्य है ताकि सभी अपनी महत्वपूर्ण सूचनाओं को समय से प्रसारित कर सकें—

1. कन्ट्रोल रूम को ग्रिड अनुशासन बनाये रखे हेतु प्रारम्भ में प्रतिदिन आरटी केन्द्रों हेतु सामूहिक पुकार (सी.क्यू.) करना चाहिये तथा बारी-बारी से सभी केन्द्रों से आवश्यक जानकारी प्राप्त करनी चाहिये।
2. सी.क्यू. के समय सभी केन्द्रों को टाईम सिगनल तत्क्षण प्रेषित करना चाहिये।
3. समस्त आवश्यक कार्यवाही को रेडियो लॉगबुक में अंकित किया जाना चाहिये।
4. आरटी केन्द्र पर पूर्वता/प्राथमिकता के अनुसार सन्देशों का निस्तारण करा जाना चाहिये।
5. केवल अपरिहार्य कारणों को छोड़कर दो केन्द्रों की वार्ता के बीच अनावश्यक बाधा उत्पन्न नहीं की जानी चाहिये।
6. विशिष्ट अतिथियों/अधिकारियों के नाम, कार्य का स्थान, कार्यक्रम का समय, आवागमन का रास्ता आदि हेतु निर्धारित कोड शब्दों का ही प्रयोग किया जाना चाहिये।
7. वर्गीकृत विषयों को सादा भाषा में प्रेषित नहीं करना चाहिये।
8. ग्रिड पर वार्ता बहुत ही सूक्ष्म एवं स्पष्ट करनी चाहिये।
9. ग्रिड पर अक्षरशः वही संदेश व निर्देश प्रसारित किये जाने चाहिये जैसा कि उच्च स्तर से सन्देश प्राप्त हुआ है ताकि सन्देश की मूल भावना प्राप्तकर्ता को प्राप्त हो।
10. प्राप्त सन्देश/निर्देशों को समझने में यदि परिचालक को भ्रान्ति हो रही हो तो उसे सम्बन्धित अधिकारी से पूछ लेना चाहिये, जिससे सही निर्देश ही प्रसारित हो सके।
11. रूटीन टाइप के सन्देशों का विवरण समय से पूर्व तैयार कर लेना चाहिये ताकि सन्देश तुरन्त प्रसारित किया जा सके।

